जल प्रबन्धन : वैदिक काल से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. दीपक डोभाल

शुद्ध जल के पारिस्थिकीय तंत्र के संदर्भ में वैदिक ऋषि भी भली प्रकार से परिचित थे कि सबको शुद्ध करने वाला जल कैसे शुद्ध होता है। उनको यह भी पता था कि सूर्य के द्वारा पृथ्वी से वाष्पीकरण की प्रक्रिया द्वारा जल सीधे आकाश में पहुंचता है और वर्षा के रूप में पुनः धरती पर आता है।

जल एक अमूल्य प्राकृतिक संपदा है, जल के बिना जीवन की कल्पना करना असम्भव है। विश्व की समस्त सभ्यताऐं एवं संस्कृतियाँ जल के निकट ही विकसित हुई हैं प्राचीन अथवा वैदिक काल से ही भारतीय ऋषि-मनीषियों ने हिन्दू सनातन संस्कृति में प्रकृति के विविध स्वरूपों को किसी न किसी देवता के रूप में मान्यता देकर उसका पूजन-बन्दन किया है। इसी संदर्भ में जल को भगवान विष्णु का स्वरूप माना गया है। वेदों में वर्णन किया गया है कि जब ब्रह्मा जी के द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि या ब्राहमाण्ड का सृजन हुआ तो उसी समय जल के द्वारा जीवन का सृजन भी हुआ। इसलिए वैदिक साहित्य में जल को सृष्टि के पंचभूत तत्वों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। सृष्टि में सर्वव्यापक जल की वंदना इस प्रकार की गयी है कि-

आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता नऽऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे।।
यो वः शवतयो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः।।
तस्याऽअरं गमाय वो यस्य क्षयाय जिन्वथा आपो जनयथा चनः[1]।।

यजुर्वेद में वर्णन है कि "हे जल समूह आप सुख के मूल स्रोत हैं, अतः आप पराक्रम से युक्त, उत्तम दर्शनीय कार्य करने के लिए हमें परिपुष्ट करें, हे जल समूह! आपका जो सबसे कल्याणप्रद रस यहां विद्यमान है, उस रस के पान में हमें वैसे ही सम्मिलित करें जैसे वात्सल्य स्नेह से युक्त मातायें अपने शिशुओं को कल्याणकारी दुग्ध रस से परिपुष्ट करती हैं। हे जल समूह! आपका वह कल्याणकारी रस पर्याप्त मात्रा में हमें उपलब्ध हो, जिस रस द्वारा आप सम्पूर्ण विश्व को तृप्त करते हैं, जिसके कारण आप हमारी उत्पत्ति के निमित्तभूत हैं, ऐसे जनोपयोगी गुणों से हमें अभिपूरित करें।

महाभारत चैत्ररथ पर्व में वर्णन आया है कि-

आपोमयाः सर्वरसाः सर्वमापो मयं जगत्।[2]

अर्थात् सभी रस जल के परिणाम हैं तथा सम्पूर्ण जगत भी जल का परिणाम माना गया है।

वैदिक ऋषि अग्नि की उत्पत्ति का स्थान जल को ही मानते हैं। जल के (बादलों को) टकराने से जहां आकाश में विद्युत उत्पन्न होती है वहीं जल के द्वारा विद्युत (अग्नि) उत्पन्न होने की प्रक्रिया से भी वैदिक ऋषि परिचित थे। यथाः-

त्वमग्ने द्युभिस्त्वभाशुशु क्षणि एत्वमद्भ्यस्त्वमश्मनस्परि।
त्वं वने भ्यस्त्वमोष धीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे सुचि।।[3]

हे मनुष्यों के स्वामी अग्निदेव आप द्युलोक से प्रकट होकर शीघ्र प्रकाशित होने वाले तथा पवित्र हैं। आप जल से (वड़वाग्नि रूप में) पाषाण घर्षण से (चिंगारी रूप में) वनों से (दावानल रूप में) औषधियों से (तेजाब युक्त ज्वलनशील रूप में) उत्पन्न होने वाले हो।

ऋग्वेद में अग्निदेव का वर्णन किया है कि यथाः

सजुदैवेभिरपां नपातं सखायं .....
यसो असम स्त्रिधदृतायोंः।।[4]

अर्थात् अग्निदेव जल को ऊपर उठाते हैं, वे सखाभाव से हमारी रक्षा करें। नदियों के समीपस्थ क्षेत्र में स्थापित अग्निदेव की स्रोतों द्वारा स्तुति करें। वे अग्निदेव जल के उत्पादक तथा शत्रुओं को मारने वाले हैं। मेघों में स्थित (विद्युत रूप में) अग्निदेव हमारे

ऊपर घात न करें। सत्यमय जीवन जीने वाले का यक्ष क्षीण नहीं होता है। यही बात वेदों में इस प्रकार कही गयी है-

अस्तु ते जन्मदिवि ते सधस्थं।[5]

हे अग्निदेव! आपके जल में विद्युत रूप की उत्पत्ति है। इसी बात को शान्ति सूक्त में कहा गया है। और आप सूक्त में वर्णित है कि:-

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः सविता या स्वाग्निः।
या अग्नि गर्भ दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शंस्योना भवन्तु।।
यासां राजा वरूणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यंजनानाम्।
या अग्नि गर्भ दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु।।
या सा देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
या अग्निगर्भ दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु।।[6]

अर्थात् जो जल सोने के समान आलौकिक होने वाले रंग से सम्पन्न अत्यधिक मनोहर, शुद्धता प्रदान करने वाला है, जिससे सविता देव और अग्निदेव उत्पन्न हुऐ हैं। जो श्रेष्ठ रंग वाला जल अग्नि गर्भ है, वह हमारी व्याधियों को दूर करके हम सभी को सुख एवं शान्ति प्रदान करे।

जिस जल में रहकर राजा वरूण सत्य एवं असत्य का निरीक्षण करते हैं। जो सुन्दर वर्ण वाला जल अग्नि के गर्भ को धारण करता है। वह हमारे लिए शान्तिप्रद हो जिस जल के सारभूत तत्व का तथा सोमरस का इन्द्रदेव आदि देवता धूलोक में सेवन करते हैं। जो अन्तरिक्ष में विविध प्रकार से निवास करते हैं। वह अग्नि गर्भा जल हमको सुख एवं शान्ति प्रदान करें।

शुद्ध जल के पारिस्थितिकीय तंत्र के संदर्भ में वैदिक ऋषि भी भली प्रकार से परिचित थे कि सबको शुद्ध करने वाला जल कैसे शुद्ध होता है। उनको यह भी पता था कि सूर्य के द्वारा पृथ्वी से वाष्पीकरण की प्रक्रिया द्वारा जल सीधे आकाश में पहुंचता है और वर्षा के रूप में पुनः धरती पर आता है। यथा-

अमूर्या उप सुर्ये याभिर्वा सुर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्।।[7]

वाष्पीकरण प्रक्रिया द्वारा जल सीधे आकाश में जाकर पुनः धरती पर वर्षा के रूप में आता है।

अर्थात जो जल सूर्य में (सूर्य की किरणों में) समाहित है अथवा जिन जलों के साथ सूर्य का सानिध्य है, ऐसे वे जल पवित्र रूप में हमारे यक्ष में उपलब्ध हो। इस ऋचा की अनुपालन की इतनी सुव्यवस्था थी कि आज भी इसका अनुपालन होता है। सूर्यार्ध्य देने की परम्परा इसलिए है कि-हे सूर्यदेव आपकी रश्मियां इस जल को ग्रहण करें इस जल को वहां तक पहुचायें जहां चर-अचर जीव जन्तुओं और वनस्पतियों तक पानी नहीं पहुंच पाता है। जिनको जल की अतिआवश्यकता है। आप इस जल को वर्षा द्वारा उन्हें प्रदान करें जिससे चर-अचर जगत में शान्ति प्रदान हो। हमारे पूर्वज पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में कितने सजग थे इस मंत्र के द्वारा इस बात को भलीभांति समझा जा सकता है यथा-

आपो अस्मान मातरः सूदयन्तु धृतेन नो धृतप्वः पुनन्तु
विश्वं हिरिप्रं प्रवहन्ति देवीरूदिदाभ्यः भुचिरा पूत एमि।।[8]

एनोनाशक सूक्त में इस प्रकार कहा गया है कि मातृवत् पोषक जल हमें पावन बनाये। घृत रूपी जल हमारी अशुद्धता का निवारण करे। जल की दिव्यता अपने द्विव्य स्रोतों से सभी पापों का शोधन करें। जल से शुद्ध और पवित्र बनकर हम उर्ध्वगामी हों। यथा:-

कृष्ण नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिव मुत् पतन्ति।
आववृप्रन्त्सदना दृत स्यादिद् धृतेब पृथिविं व्यूः दुः।।[9]

श्रेष्ठ गतिमान सूर्य किरणों से जल ऊपर उठता हुआ आकर्षण के केन्द्र यान के रूप में सूर्यमण्डल के समीप पहुंचता है। वहां अन्तरिक्ष के मेघों में स्थित जल को बरसाते हुए पृथ्वी को तृप्त कर देती है।

आयन्ति दिव पृथिवि सचन्ते.....सर्वः व्यापतः भुचयः षुचित्वम्।।।[10]

दिव्य लोक से आगमन करने वाली जल धारायें पृथ्वी लोक में एकत्रित होती हैं। पृथ्वी से वाष्पभूत होकर पुनः अंतरिक्ष में घनीभूत होती हैं। वह शुद्ध जल सबको पावन बनाता है। ऐसा पवित्र जल हमें स्वर्गीय सुखों की ओर ले जाये, जल निश्चित ही प्रभावशाली, प्रशंसनीय, बलवर्धक, पवित्र अमृत तुल्य और प्रभु स्वरूप है। हे जल आप प्राण व अपान वायु सहित औषधीय गुणों से जल बिन्दु से पृथ्वी को सिंचित करते हैं। सुन्दर वर्ण वाले जीवों में प्रविष्ठ होकर उन्हें सुचिता प्रदान करते हुए उनमें व्याप्त होते हैं।

मानव ही नहीं बल्कि पशुओं के लिए भी स्वच्छ जल पिलाना मानव के हित में है। गाय को पिलाए जाने वाला जल यदि अशुद्ध या विषयुक्त होगा तो वे विषाणु दूध के रास्ते मानव शरीर में आयेंगे जिससे मानव को भी क्षति पहुंच सकती है।[11] इसलिए प्रार्थना की गयी है कि-

हम स्वयं रोग रहित तथा रोग विनाशक जल को अनश्वर अग्निदेव के साथ घर में स्थिर करते हैं। इस मंत्र में घर में शुद्ध अग्नि एवं शुद्ध जल को रखना अति आवश्यक है। अथर्ववेद में भी नदियों की अन्तर्निहित रोग शामक शक्तियों का वर्णन किया गया है। अथर्ववेद में रुद्रदेव को जल चिकित्सा करने वाला बतलाया गया है।

आपो देविरूपा हये यत्रगावः पिवन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्व हविः।।[11]

ऋग्वेद में कहा गया है कि हमारी गायें जिस जल का सेवन करती हैं उन जलों का हम स्तुति गान करते हैं। अंतरिक्ष एवं भूमि पर प्रवाहमान उन जलों के निमित्त हम छवि अर्पित करते हैं।

श्रवात्र पीता भवत.....स्वछन्तु देवीरामृता ऋतावृक्षः[12]**।।**

यजुर्वेद में कहा गया है, हे जलः

शुद्ध जल सम्पूर्ण रोगों का निवारक है

दुग्ध रूप में हमारे द्वारा सेवन किये गये आप धीघ्र ही पच जाये। पिये जाने के पश्चात आप हमारे पेट में सुखकारी हों। ये जल राजरोग से रहित सामान्य बाधाओं को दूर करने वाले अपराधों को दूर करने वाले यक्षों में सहायक अमृत स्वरूप, दिव्य गुणों से युक्त हमारे लिए स्वादिष्ट हो और जल तभी शुद्ध रह सकता है। जब वह प्रवाहमान बना रहे।

अर्थवेद में वर्णन है कि-

उद्व उर्मीःशम्या...नसावध

न्यावभुनभारताम।।[13]

अर्थात् हे जल आपकी तरंगे निरंतर प्रवाहमान रहे, हे दुष्कर्महीना पाप रहिता, आनन्दनीया नदियोंः आपको कोई बाधा न हो तथा यही बात यक्ष सूक्त में भी कही गयी है।

सं से स्रवन्तु नद्यः।[14]

वेदों में जल चिकित्सा के बारे कहा गया है कि वैदिक कालीन लोग अशुद्ध जल को रोगों का कारण मानते थे उनकी मान्यता थी कि किस प्रकार शुद्ध जल सभी प्रकार के रोगों का नाश करता है। अथर्वेद में भी जल चिकित्सा का वर्णन किया गया है। कि ऋग्वेद में वर्णन है कि-

आपा दूद्वा उ भेयषजीरापो

अमीवचातनीः।

आपः सर्वस्य भेषजीस्ता स्तेकृष्वन्तु

भेषजम्।।[15]

अर्थात् शुद्ध जल सम्पूर्ण रोगों का निवारक है। जल ही रोगों के मूल (कारण) को नाश करने वाला है। जल ही सभी के लिए हितकारी औषधि रूप है। वही आपके निमित्त रोग नाशक है। यजुर्वेद में भी कहा गया है कि-

शं नो देविरभिष्टयऽ आपो भवन्तु

पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः[16]।

दिव्य जल हम सबके लिए अभीष्ट फल दायक तथा तृप्तिदायक बने। वह हमारे रोगों का शमन तथा अनिष्ठ उठाने के लिए बरसता रहे। इस प्रकार हमारा कल्याण करता रहे। वैदिक ऋषि विषाक्त जल के दुष्परिणामों को बतलाते हुऐ कहते हैं कि कुछ विषैले कुछ विषरहित और कुछ जल में रहने वाले अल्पविषजीवी होते हैं। ये दृश्य एवं अदृश्य दोनों होते हैं। ये दोनों ही शरीर में दाह (रोग) उत्पन्न करते हैं। यह औषधि उन अदृश्य जीवों के विष को समाप्त करती है। विषैले जीवों के विष को नष्ट करने के बारे में वैदिक ऋषि प्रार्थना करते हैं कि-

आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वेऽमम्।

ज्योकच सूर्य दृशे[17]।

हे जल समूह! जीवन रक्षक औषधियों को हमारे शरीर में स्थिर करें जिससे हम निरोग होकर चिरकाल तक सूर्यदेव का दर्शन करते रहें। क्योंकि जल समस्त रोगों की औषधि है। स्नान पान आदि द्वारा यह जल औषधि के रूप में समस्त रोगों को दूर करता है। जो अन्य औषधियों की भांति एक रोग की नहीं बल्कि समस्त रोगों की एक दवा है। जो इस जल के द्वारा समस्त रोग दूर हो जाते हैं। जल को अभिमंत्रित करने का मंत्र है जिससे बिमारियाँ दूर हो जाती हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि-

इमा आपः प्र भराम्ययक्ष्मा

यक्ष्मनाशनीः।

गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन

सहाग्निना।।[18]

हम स्वयं रोग रहित तथा रोग विनाशक जल को अनश्वर अग्निदेव के साथ घर में स्थिर करते हैं। इस मंत्र में घर में शुद्ध अग्नि एवं शुद्ध जल को रखना अति आवश्यक है। अथर्ववेद में भी नदियों की अन्तर्निहित रोग शामक शक्तियों का वर्णन किया गया है। अथर्ववेद में रुद्रदेव को जल चिकित्सा करने वाला बतलाया गया है।

वैदिक काल में दूषित जल के शमन करने के लिए गड्ढे खोदे जाते थे जिससे बिमारी न फैलने पाये। इस कार्य में विशेष मर्यादा रखी जाती थी। यजुर्वेद में वर्णन है कि-

दूर्य ते यक्षीया तनूरपो भुंचामि न

प्रजाम्।

अंग्वं हो मचुः स्वाहाकृताः

प्रथिवीमाविशत पृथिव्या सम्भव।।[19]

(हे यक्ष पुरूष) हे पृथ्वी माता आपका यक्ष योग्य शरीर है, हम इस स्थान (गड्ढे) में विकार युक्त जल का परित्याग करते हैं। प्रजा के लिए उपयोगी रस का त्याग नहीं करते हैं। यह प्रक्रिया पापमोचक है। स्वाहा रूप में स्वीकार करने योग्य जल विकारयुक्त होने पर त्याज्य हो जाता है। यह दूषित जल पृथ्वी में प्रविष्ट होने पर मिट्टी के साथ एकाकार हो जाय। यही बात पूर्व में भी कई बार आ चुकी है। नदियों

वैदिक काल में दूषित जल के शमन के लिए गड्ढे खोदे जाने की परम्परा रही है

स्नान करने से जल सदबुद्धि को प्रेरित करता है

के बारे में कहा गया है कि नदियों के किनारे जल काई (सिवांर) और वेतस (कुशा घास, नड़ आदि उगने वाली घास) जल शोधन का कार्य करती है। अग्निदेव का आह्वाहन करते हुए कहा गया है कि हे अग्निदेव! आप जल एवं पित्त दोनों का शोधन करने वाले हैं।

वैदिक काल से वर्णन किया जाता है कि शुद्ध जल सृष्टि के उद्भव काल से ही सद्वृत्तियों का प्रेरक माना गया है। ऋग्वेद में वर्णन किया गया है कि- हे जल देवो! हम याजकों ने अज्ञानतावश जो दुष्कर्म किये हों जानबूझकर किसी से द्वेष किया हो, सत्पुरूषों पर आक्रोश किया हो या असत्य का आचरण किया हो, हमारे समस्त दोषों को बहाकर दूर करें। मंत्रों में यह भी स्पष्ट है कि जल में स्नान पाप शामक है। इसलिए समस्त हिन्दू समाज नदियों के पवित्र जल में स्नान करता है। इससे यह सिद्ध होता है कि स्नान करने से जल सद्बुद्धि को प्रेरित करता है। जल की प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि औषधियुक्त जल हमारा संरक्षण करे और हमें सद्वृत्तियों की ओर प्रेरित करें।

वर्तमान में सम्पूर्ण राष्ट्र या विश्व में जल की विकराल समस्या पैदा हो रही है। पानी को लेकर विश्व युद्ध से लेकर महाविनाश तक की बातें कही जा रही हैं। ऐसे समय में यजुर्वेद के इन मंत्रों की प्रासंगिकता कहीं अधिक बढ़ जाती है जिसमें इस प्रकार वर्णित किया गया है कि- हे जल समूह! आप आर्थोपाजन करने वाले हैं। अतः हमें राष्ट्र प्रदान करें। इसके लिए यह आहुति आपको समर्पित है। आप ऐश्वर्य के बल से सामार्थ्यवान हैं, ओजस्वी हैं और पराक्रमी हैं तथा राष्ट्र देने में समर्थ हैं। इसके लिए यह आहुति समर्पित है। हे जल समूह! आप सूर्य की कान्ति से उत्पन्न हैं। आप सूर्य के समान तेजस्वी हैं। आप मनुष्यों को आनन्द देने वाले हैं। आप गवादि पशुओं के पालनकर्त्ता और रक्षक हैं। आप अत्यन्त बलशाली एवं पराक्रमी हैं। आप समस्तविश्व के पोषणकर्ता तथा धारणकर्ता हैं आप सभी विधाओं और धर्मों के ज्ञाता हैं। अतः आप राष्ट्र प्रदान करने वाले हो इसके लिए यह आहुति समर्पित हैं। अतः हे जल आप हमारे रक्षक बनकर हमारे स्थान पर प्रतिष्ठित हों।

वेदों के इन मंत्रों में जल की अपरिमित शक्ति का वर्णन किया गया है। जिससे सीख लेने की आवश्यकता है। इस प्रकार वैदिक जीवन में जल प्रबन्धन की व्यवस्था बड़ी सुदृढ़ थी तथा वैदिक ऋषियों ने अपने दिव्य ज्ञान से जल का उपयोग करके प्रत्येक पहलू पर बारीकी से विचार करके उसकी महत्ता को प्रतिपादित किया। भारत के लिए यह भी दिशा है कि यदि जल का श्रेष्ठ प्रबन्धन कर सकते हैं तो वह दिन दूर नहीं कि भारत सम्पूर्ण विश्व में सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र एवं महाशक्ति के रूप उभरकर सामने आयेगा, अपनी जलशक्ति के बल पर विश्व के समस्त राष्ट्रों पर नियंत्रण करके एक महाजलशक्ति के रूप में उभरकर अपनी अलग पहचान बनाये रखेगा।

सन्दर्भः

1-यजुर्वेद 11/50-52, 36/15,
2-आदिपर्व 199/18,
3-ऋग्वेद 2/1/1,
4-ऋग्वेद 9/35/15-19
5-अथर्ववेद 6/80/3
6-अथर्ववेद 9/33/1-3
7-ऋग्वेद 1/23/19
8-उत्तराखंड में जल संसाधन प्रबन्धन-
पृष्ठ-77
9-अथर्ववेद 6/51/2
10-अथर्ववेद 6/51/2
11-उत्तराखंड में जल संसाधन प्रबंधन-पृष्ठ-78
12-ऋग्वेद 1/23/18
13-यजुर्वेद 4/12
14-अथर्ववेद 19/1/1
15-ऋग्वेद 10/139/6
16-अथर्ववेद 3/12/9
17 यजुर्वेद 5/13
18-डॉ. भगवती प्रसाद पुरोहित- पुस्तकः-उत्तराखंड में जल संसाधन प्रबन्धन (वैदिक काल में जल प्रबन्धन, पृष्ठ 75-83 से अवतरित)

संपर्क करें:
डॉ. दीपक डोभाल
बी.एस.एम. (पी.जी.) कालेज, रुड़की
जिला - हरिद्वार,
पिन कोड - 247 667, राज्य - उत्तराखंड
मो.न. 9720770574